इवान इलिच का शिक्षा–चिंतन

❑ नंदकिशोर आचार्य

इवान इलिच के तीक्ष्ण विचारों ने विश्व भर के शैक्षिक परिदृश्य में हलचल मचा दी थी । उनके सुझाये विकल्पों को भले ही शिक्षाविदों ने स्वीकार नहीं किया लेकिन शिक्षा के पारंपरिक और प्रचलित ढ़र्रे को लेकर उनकी आलोचना का प्रतिकार संभव नहीं है । आज जब दुनिया फिर संक्रमण से गुजर रही है, इवान इलिच का शिक्षा-चिंतन हमें ज्ञान के वर्चस्व से आगाह करता इसके विकेन्द्रण का मार्ग प्रशस्त करता है।

इवान इलिच उन क्रान्तिकारी विचारकों में अग्रणी हैं जो यह मानते हैं कि आधुनिक सामाजिक-राजनैतिक संस्थाएं, चाहे भिन्न राजनैतिक विचारधारा से प्रेरित समाजों में उनके घोषित उद्देश्य और औपचारिक संगठन एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न और कभी-कभी विरोधी भी लगते हों , व्यक्ति के विकास की बजाय उसका विमानवीकरण करती जा रही हैं, और अब उनमें सुधार की कोई संभावना नहीं बची है इसलिए उन्हें जड़ से नष्ट कर देना ही व्यक्ति के स्वतंत्र विकास की, और इसलिए समाज के विकास की भी, एक मात्र गारंटी हो सकती है । इसलिए इलिच जब वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था पर आक्रमण करते हैं तो वह आक्रमण पूरी समाज व्यवस्था पर होता है, क्योंकि शिक्षा न केवल उसका एक अनिवार्य अंग है बल्कि उसी के माध्यम से वर्तमान समाज-व्यवस्था अपने को बनाये रखने की साजिश करती है । इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास का नहीं बल्कि यथास्थितिवाद का माध्यम हो जाती है। अपनी बहुचर्चित्त पुस्तक 'डिस्कूलिंग सोसाइटी' के बाद इलिच ने आधुनिकचिकित्सा और उद्योग व्यवस्था पर भी तेज आक्रमण किया है । इलिच का आक्रमण अधिकांशत: वैध लगता है । यद्यपि उनके पास कोई स्पष्ट विकल्प नहीं है - शायद उनका विश्वास है कि वर्तमान व्यवस्था के ढांचे के टूट जाने पर स्वत: ही कोई न कोई विकल्प विकसित हो सकेगा । अत: सबसे पहली आवश्यकता है उन संस्थाओं को नष्ट करना जो यथास्थिति की पोषक और समर्थक हैं । अपनी इस धारणा में इलिच उन्नीसवीं शताब्दी के रूसी शून्यवादियों के आस-पास पहुंच जाते हैं । शिक्षा उनके आक्रमण का सीधा निशाना होती है तो इसलिए कि उसके माध्यम से समाज के भावी स्वरूप को भी वर्तमान से जकड़ दिया जाता है । 'डिस्कूलिंग सोसाइटी' की इस बात के लिए तो प्रशंसा की गई कि उसमें वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था के दोषों को बड़ी स्पष्टता से उजागर किया गया है लेकिन साथ ही यह भी कहा गया है कि इलिच कोई ठोस विकल्प प्रस्तुत नहीं करते । अत: इलिच ने एक लम्बा निबन्ध लिखा : 'आफ्टर डिस्कूलिंग व्हाट?' जिसमें उन्होंने शिक्षा की स्कूली प्रक्रिया को समाप्त कर उसके वैयक्तिकीकरण पर बल दिया और इसकी व्यवस्था के लिए भी कुछ संकेत दिए । इस निबन्ध पर बहुत से प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं और उनसे भी यही लगा कि शिक्षा जगत् इलिच की आलोचना दृष्टि से तो सहमत है पर उनके सुझावों को स्वीकार्य नहीं मानता।

इलिच की मान्यता है कि अन्य संस्थाओं की तरह आधुनिक स्कूली शिक्षा व्यवस्था भी औद्योगिक समाज का ही एक प्रतिफल है । उद्योगीकरण की प्रक्रिया ने जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु को एक उद्योग बना दिया है उसी प्रकार शिक्षा को भी; और इसलिए ज्ञान भी एक 'जिंस' - एक कमोडिटी - हो गया है। ज्ञान के आदान-प्रदान की प्रणाली बिलकुल यान्त्रिक है और उसका परिणाम बिलकुल औद्योगिक । सीखना एक मानवीय और वैयक्तिक कर्म न रहकर एक यान्त्रिक प्रक्रिया हो गया है । इसलिए अधिकांशत: यह समझा जाता है कि कुछ नयी और अधिक कुशल संस्था बनाकर ज्ञानरूपी 'जिंस' के उत्पादन और खपत को अधिक व्यापक बनाया जा सकता है। उद्योग जिस प्रकार उत्पादन के साथ साथ उपभोक्ताओं की वृद्धि पर निर्भर करते हैं उसी प्रकार शिक्षा भी एक 'जिंस' हो जाने पर अपने उपभोक्ताओं की संख्या पर निर्भर करती है, इस पर नहीं कि वह क्या दे रही है - बिना इस पर विचार किये कि वह जो दे रही है उससे कहीं उपभोक्ताओं की सीखने की सहजवृत्ति ही तो दमित नहीं हो जा रही ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्कूली प्रक्रिया - यदि हम अनिवार्य उपस्थिति और प्रमाण-पत्र वितरण को उसमें से निकाल दें तब भी - इस बात की कतई चिन्ता नहीं करती कि शिक्षार्थी क्या और कैसे सीखना चाहता है । शिक्षार्थी की अपनी आवश्यकताओं के लिए कोई संवेदना उसमें नहीं है। इसी से स्पष्ट है कि शिक्षा का लक्ष्य शिक्षार्थी के स्वभाव और व्यक्तित्व के अनुकूल उसके विकास में सहायक होना नहीं बल्कि उसे एक विशाल औद्योगिक समाज-तन्त्र का एक पुर्जा बना देना हो गया है। इलिच का कहना है कि इसी कारण ज्ञान को भी इतना

अधिक जटिल बना दिया गया है कि वह धीरे-धीरे एक विशिष्ट वर्ग की सम्पत्ति होता जा रहा है। सामान्य व्यक्ति इस जटिलता और विशेषज्ञता तथा उसकी समर्थक व्यवस्था के सम्मुख स्वयं को तुच्छ और असहाय महसूस करने लगता है और विडम्बना यह है कि इस प्रक्रिया में से गुजरने पर वह ठीक से तो क्या सतही स्तर पर भी नहीं समझ पाता। यदि शिक्षार्थी में किसी चीज को समझे बिना ही मान लेने की प्रवृत्ति विकसित होने लगे तो इसे शिक्षा की सार्थकता कहा जाय या असफलता ?

इस अबौद्धिक प्रवृत्ति के विकसित होने का दोष किसी तरह के पाठ्यक्रम का नहीं है- इसलिए पाठ्यक्रम को सुधार या बदलकर शिक्षा में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं लाया जा सकता और शायद इसी कारण साम्यवादी और लोकतांत्रिक दोनों ही प्रकार के समाजों में पाठ्यक्रम के आधारभूत अन्तर के बावजूद यही अबौद्धिक प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। इसका दोष स्कूली प्रक्रिया का है जो दोनों ही प्रकारों के समाजों की शिक्षा-व्यवस्था का केन्द्रीय आधार है । इलिच इस स्कूली प्रक्रिया को ही एक 'गुप्त पाठ्यक्रम' की संज्ञा देते हैं जिसमें से गुजरने पर शिक्षार्थी अपने निर्णय पर विश्वास नहीं करता बल्कि शिक्षक के निर्णय को मान लेने को अभिशप्त हो जाता है, चाहे वह उससे असन्तुष्ट ही बना रहे - क्योंकि वह यह भी तो महसूस करने लगता है कि वह वास्तविकता को नहीं बदल सकता। यह प्रक्रिया शिक्षार्थी को शिक्षा से काट देती है और उसी प्रकार 'अजनबी' बना देती है जिस प्रकार वर्तमान औद्योगिक प्रणाली कारीगर को मजदूर बनाकर पूरी उत्पादन प्रक्रिया के प्रति उसमें एक 'अलगाव' का भाव विकसित कर देती है । औद्योगिक समाज में ज्ञान भी एक पूंजी हो जाता है और विशेषज्ञों, सामान्य शिक्षितों तथा कम शिक्षितों या अशिक्षितों के बीच उसी प्रकार के वर्ग बन जाते हैं जो समाज में पूंजी के आधार पर बनते हैं और मानव को मुक्त करने का दावा करने वाली 'विद्या' उसके बंधन शोषण और दमन का माध्यम हो जाती है ।

इलिच समझते हैं कि इस स्थिति में छोटे-मोटे सुधारों द्वारा कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकता । स्थिति में बुनियादी परिवर्तन तभी हो सकता है जब उस स्थिति को बनाये रखने वाली प्रक्रिया में बुनियादी परिवर्तन हो । स्कूली प्रक्रिया के होते हुए ज्ञान को और उसे प्राप्त करने वाले व्यक्ति और समाज को विमानवीकरण से नहीं बचाया जा सकता । इसलिए स्कूली प्रक्रिया का नष्ट होना आवश्यक है और उतना ही आवश्यक है उस व्यवस्था का नष्ट होना जो इस स्कूली प्रक्रिया का कारण और आधार है । लेकिन क्योंकि स्कूली प्रक्रिया भी उस व्यवस्था को बनाये रखने की प्रक्रिया है, अत: उसको नष्ट करने से शुरू करने पर हम अपने आखिरी लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं, इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा का विस्कूलीकरण किया जाए ।

लेकिन तब शिक्षा की नयी प्रक्रिया क्या होगी ? स्कूलीकरण का विकल्प क्या है ? इलिच ने विकल्प प्रस्तुत करने की कुछ कोशिश की है, यद्यपि अधिकांश शिक्षा-शास्त्रियों की राय में यह कोशिश कोई ठोस शक्ल नहीं ले पाती । उनकी राय में स्कूल को समाप्त करने का तात्पर्य है शिक्षा की स्वतंत्रता की गारण्टी । शिक्षार्थी का यह अधिकार है कि वह अपनी पसन्द और अपने तरीके से शिक्षा ग्रहण करे बल्कि समाज का इसमें कोई हस्तक्षेप न हो कि वह कैसी शिक्षा ग्रहण कर रहा है और उसे उससे क्या लाभ होगा । शिक्षा में भी वैयक्तिकता और 'प्राइवेसी' की सुरक्षा होनी चाहिए। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को ही उन परिणामों की जिम्मेदारी लेनी होगी जो उनकी आपसी पसन्द की शिक्षा प्रक्रिया से उपजते हैं । लेकिन इसके लिए जरूरी होगा कि तथ्यों, उपकरणों और शिक्षक तक शिक्षार्थी की सीधी पहुंच हो । किसी भी प्रकार के ज्ञान का श्रेष्ठ शिक्षक वही हो सकता है जो उसी कर्म में लगा हो - वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में इस तरह के लोगों की बजाय शिक्षक का पेशा करने वाले लोग ही महत्वपूर्ण हैं, उन्हीं के द्वारा दी गई शिक्षा प्रामाणिक है और वह अन्य किसी भी प्रकार की 'अप्रामाणिक शिक्षा' को समाज में अवैध करार देती है । स्कूलरहित समाज में यह जरूरी होगा कि व्यावहारिक स्तर पर कार्यरत लोगों के लिए भी कुछ लाभकारी प्रेरणा स्रोत हों ताकि वे भी अपने ज्ञान में दूसरों की भागीदारी के लिए उत्सुक हों ।

ज्ञान को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाना भी तभी संभव हो सकता है जब उसकी जटिलता और विशेषीकरण की प्रवृत्ति को हर संभव सीमा तक न्यूनतम किया जाय । विज्ञान के लाभों को सब तक पहुंचाने और वैज्ञानिक ज्ञान तक सब की पहुंच संभव करने के लिए एक ऐसी टेक्नॉलोजी का विकास भी आवश्यक है जिसके उपकरण अधिकाधिक लोगों द्वारा आत्म-निर्भरता के साथ इस्तेमाल किये जा सकें । इन शैक्षिक आवश्यकताओं के कारण इलिच वर्तमान उत्पादन प्रणाली के स्थान पर एक ऐसी उत्तर औद्योगिक उत्पादन प्रणाली की मांग करते हैं जो श्रम आधारित उपकरणों पर आधारित हो और वे भी इतने जटिल न हों कि उनकी मरम्मत के लिए भी विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ने लगे । इलिच की मान्यता है कि उपलब्ध तकनीकी ज्ञान के आधार पर इस तरह के उपकरण बनाये जा सकते हैं - यह विज्ञान पर नहीं, उसका इस्तेमाल करने वाली दृष्टि पर निर्भर करता है । अपनी पुस्तक 'स्कूलिंग सोसाइटी' में भी इलिच ने स्कूल रहित शिक्षा-प्रक्रिया के विकल्प के रूप में

चार तरह की प्रक्रियाओं का सुझाव दिया था । जो शिक्षक के बजाय शिक्षार्थी पर आश्रित कही जा सकती हैं :

1. शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए संदर्भ सेवाएं, जो औपचारिक शिक्षा के लिए उपयुक्त चीजों और प्रतिक्रियाओं तक पहुंच को आसान करती हों;

2. दक्षता का आदान-प्रदान, जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी दक्षताओं की सूची अपनी शर्तों के साथ प्रकाशित कर सकता है;

3. एक ऐसी संचार-व्यवस्था का विकास, जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी शैक्षिक गतिविधि का विवरण दे सकता हो, ताकि वह अपने लिए योग्य साथी का चुनाव कर सके; तथा

4. शिक्षकों की एक ऐसी व्यापक संदर्भ-सेवा का विकास, जो सभी शिक्षकों की दक्षता, प्रक्रिया और शर्तों से दूसरों को परिचित करवाकर उन तक शिक्षार्थी की पहुंच संभव कर सके ।

इलिच के इन प्रस्तावों पर जिन शिक्षा-शास्त्रियों ने विचार किया उनमें रोनाल्ड ग्रॉस, आर्थर पर्ल, जेडसन जीरोम, नील पोस्टमैन और हरबर्ट जिंटिस जैसे शिक्षाशास्त्री सम्मिलित हुए । लेकिन यह मानते हुए भी कि स्कूली प्रक्रिया की इलिचीय आलोचना न केवल गंभीर और पैनी है बल्कि इस प्रक्रिया के सारे दोषों को उनके पूरे व्यापक परिणामों के साथ उजागर करती है, ये शिक्षा शास्त्री उसके द्वारा सुझाये गये हल और विकल्प को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हो सके । उनकी राय में विस्कूलीकरण कोई आदर्श हल प्रस्तुत नहीं करता । उनकी आपत्तियां सैद्धांतिक भी हैं और कुछ व्यावहारिक भी ।

इलिच की दृष्टि मूलत: निषेधात्मक दृष्टि है क्योंकि वह सामाजिक संस्थाओं के - और इसलिए स्कूल के भी - उस स्वरूप को तो देखती है जो व्यक्ति और शिक्षार्थी की स्वतंत्रता को कुण्ठित करने लगा है, लेकिन संस्थाओं के उस स्वरूप की ओर उसका ध्यान नहीं जाता जिसके कारण समाज एक इकाई बना और रह सका है । समय और परिस्थिति के अनुरूप संस्थाओं के स्वरूप और प्रक्रिया में परिवर्तन की आवश्यकता पड़ती है लेकिन उनको बिलकुल नष्ट कर देना समाज को पुन: जंगल की ओर लौटा ले जाना होगा - बल्कि ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में वह शायद संभव ही नहीं है । इलिच यह मान लेते हैं कि आधुनिक औद्योगिक समाजों की समस्याएं मूलत: संस्थापरक हैं और उनका हल सामाजिक बीजकोष में है । लेकिन जैसा कि हरबर्ट जिंटिस कहते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि स्वयं औद्योगीकरण और उससे उत्पन्न संस्थाओं का बीजकोष आर्थिक़ है और अपने विश्लेषण को उस पर आधारित किए बिना कोई वास्तविक हल नहीं निकाला जा सकता । लेकिन वह हल विस्कूलीकरण नहीं होगा क्योंकि सम्पन्न और महत्त्वांकाक्षी लोग शिक्षा की सत्ता को भी अधिक से अधिक अपने में केन्द्रित कर लेंगे और कम भाग्यशाली या सामाजिक दृष्टि से पिछड़े लोगों का दोहन करते रहेंगे । ज्ञान भी सत्ता का एक प्रकार हो सकता है और उस बंटबारे को पूर्णतया निजी क्षेत्र में छोड़ देना एक ऐसे वर्ग को जन्म दे सकता है जो ज्ञान को भी पैतृक सम्पत्ति बना दे और कुछ विशेष प्रकार के ज्ञान को कुछ विशेष प्रकार के लोगों के लिए ही आरक्षित कर अन्य का बहिष्कार कर दे । क्या कभी वेद का ज्ञान शूद्रों और स्त्रियों के लिए निषिद्ध नहीं कर दिया गया था ? आर्थर पर्ल का यह कहना सही लगता है कि सार्वभौमिक शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है और उसको संगठित किया जाना चाहिए क्योंकि मनुष्य के अस्तित्व के खतरे भी सार्वभौम हैं । आज हम जिन मानव अधिकारों को सम्माननीय और रक्षणीय समझते हैं उनकी रक्षा एक संस्थागत ढांचे में ही हो सकती है - आदिम समाजों में वैयक्तिक और मानवीय अधिकारों की कोई धारणा तक भी नहीं थी ।

इसके अतिरिक्त इस बात पर भी गौर किया जाना चाहिए कि मनुष्य स्वतंत्रता से भी कई स्तरों पर और कई रूपों में पलायन करता है । एरिक फ्राम के अनुसार स्वतंत्रता और आज के अन्य सत्य पीड़ादायक सत्य है अत: मनुष्य उनसे बचने की हर संभव कोशिश करता है । उसे यह अधिकार तो है कि वह उन से प्रभावित हो या नहीं, लेकिन वे हैं इसकी जानकारी के बिना उसका काम नहीं चल सकता । ऐसी जानकारी देने के लिए भी किसी न किसी प्रकार की संस्था की आवश्यकता होगी । साथ ही यह भी देखना होगा कि वे अधिकांश लोग, जिनकी इलिच चिन्ता करते हैं विस्कूलीकरण से सहमत हैं या नहीं । अधिकांश गरीब और अशिक्षित लोग स्कूल चाहते हैं - एक ऐसा स्कूल जो उनके नियंत्रण में हो । इलिच कह सकते हैं कि उन्हें यह समझ नहीं कि वे क्या कर रहे हैं लेकिन ऐसा कहना इलिच की बुनियादी मान्यता का ही विरोध करना होगा । क्योंकि इलिच ही तो सबको यह अधिकार देना चाहते है कि सब अपने तरीके से अपनी पसन्द की शिक्षा ग्रहण कर सकें । लेकिन इलिच के विचार फिर भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं । उनकी आलोचना को दृष्टि के सम्मुख रखने पर हमें एक ऐसा पैमाना मिल जाता है जिसके आधार पर हम नयी शिक्षा के विकास को परख सकें और उसे मानवीय बना सकें । नील पोस्टमैन के शब्दों में 'इलिच हमारे टालस्टाय हो सकते हैं, लेनिन नहीं ।' उन पर हम विचार कर सकते हैं पर उसी तरह जिस तरह हम एक मौलिक कवि पर विचार करते हैं - वैसे नहीं जैसे एक राजनीतिक क्रान्तिकारी पर किया जाता है । ◆